

Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

B.A. PART -I. PAPER-I

चिंतन : चिंतन के प्रकार (THINKING: TYPES OF THINKING)

चिंतन(thinking)- चिंतन एक अव्यक्त एवं जटिल मानसिक प्रक्रिया है, जिसकी शुरुआत किसी न किसी समस्या से होती है और जिसका समाधान प्राणी अपने गत अनुभव पर आधारित प्रतिमाओं, प्रतीकों, संप्रत्ययों, नियमों एवं अन्य मध्यस्थ इकाइयों के मानसिक जोड़-तोड़ के द्वारा करने का प्रयास करता है। यह एक ऐसी मस्तिष्किय मध्यस्थ प्रक्रिया है, जो किसी समस्या (उद्दीपक) तथा उसके समाधान(सही अनुक्रिया) के मध्य या बीच में होती है। चिंतन एक अव्यक्त मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से प्राणी का मुख्य उद्देश्य किसी समस्या को सुलझाना होता है। यह प्राणी के प्रकट एवं अप्रकट व्यवहारों के रूप में प्रदर्शित होता है। चिंतन की एक मुख्य विशेषता यह है कि यह लक्ष्य निर्देशित होता है

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने चिंतन की परिभाषा अपने-अपने शब्दों में दी है-

कागन तथा हेभमैन(Kagan and Havemanman) के अनुसार, "प्रतिमाओं, प्रतीकों संप्रत्ययों, नियमों एवं अन्य मध्यस्थ इकाइयों के मानसिक जोड़-तोड़ को चिंतन कहा जाता है।"

सिल्वरमैन(Silverman) के शब्दों में, "चिंतन एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जो हम लोगों को उद्दीपक तथा घटनाओं के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व द्वारा किसी समस्या का समाधान करने में मदद करती है।"

बेरोन(Baron) के अनुसार, "चिंतन में संप्रत्ययों, प्रतिज्ञाप्ति तथा प्रतिमाओं का मानसिक जोड़-तोड़ होता है।" चिंतन की उपरोक्त विवेचना एवं मनोवैज्ञानिकों द्वारा दिए गए परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हमें चिंतन प्रक्रिया के बारे में कुछ तथ्य प्राप्त होते हैं जो निम्नांकित हैं-

- क) चिंतन एक अव्यक्त एवं जटिल मानसिक प्रक्रिया है।
- ख) चिंतन में प्रतीकों, प्रतिमाओं, आदि का मानसिक जोड़-तोड़ होता है
- ग) चिंतन एक मध्यस्थ प्रक्रिया होती है, जो किसी समस्या से शुरू होती है एवं समस्या के समाधान होने तक चलती रहती है।
- घ) सभी चिंतन लक्ष्य निर्देशित होते हैं।

चिंतन के प्रकार types of thinking)-चिंतन के मनोवैज्ञानिक अध्ययन हेतु इसे कई प्रकारों यथा भागो एवं उप भागों में बांटा गया है। जो निम्नलिखित हैं-

- 1) स्वली चिंतन(autistic thinking)
- 2) यथार्थवादी चिंतन(realistic thinking)

1) स्वली चिंतन(autistic thinking) - यह ऐसा चिंतन होता है जिसमें व्यक्ति अपनी काल्पनिक विचारों एवं इच्छाओं की अभिव्यक्ति करता है। स्वप्न, स्वप्न-चित्र (कल्पना) तथा अभिलाषा आदि सभी स्वली चिंतन के उदाहरण हैं। जैसे- 'खुशी' यह सोचती है कि वह एक परी रहती तो आकाश में पंख फैलाकर खूब उड़ती। यह एक स्वली चिंतन का उदाहरण है क्योंकि इसमें किसी समस्या का समाधान नहीं होता है

2) यथार्थवादी चिंतन(realistic thinking)-ऐसे चिंतन का संबंध वास्तविकता से होता है और इसके सहारे व्यक्ति किस समस्या का समाधान करता है। जैसे- उज्ज्वल पंखा का स्विच ऑन करता है लेकिन पंखा नहीं चलता ऐसी स्थिति में वह सोचता है कि आखिर खराबी कहां है। स्विच खराब है कि पंखा जल गया है या तार शार्ट कर गया है। इस तरह का चिंतन यथार्थवादी चिंतन का उदाहरण है क्योंकि इसमें समस्या समाधान करने से

संबंधित चिंतन हो रहा है।

यथार्थवादी चिंतन की प्रकृति के आधार पर मनोवैज्ञानिकों ने इसे तीन भागों में बांटा है-

- १) अभिसारी चिंतन(convergent thinking)
- २) सर्जनात्मक चिंतन(creative thinking)
- ३) आलोचनात्मक चिंतन(evaluative thinking)

१) अभिसारी चिंतन(convergent thinking)- अभिसारी चिंतन को निगमनात्मक चिंतन भी कहा जाता है। इस चिंतन में व्यक्ति दिए गए तथ्यों के आधार पर किसी सही निष्कर्ष पर पहुंचने की कोशिश करता है। ऐसे चिंतन में व्यक्ति अपनी जिंदगी के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में प्राप्त अनुभव को एक साथ मिलाकर उसके आधार पर एक समाधान खोजता है। जैसे- आप से पूछा जाए कि 1 किलोग्राम में कितने ग्राम होते हैं, तो इसके उत्तर देने में निहित चिंतन 'अभिसारी चिंतन' का उदाहरण होगा।

२) सर्जनात्मक चिंतन(creative thinking)- सर्जनात्मक चिंतन को आगमनात्मक चिंतन भी कहा जाता है। ऐसे चिंतन में व्यक्ति दिए गए तथ्यों में अपनी ओर से नया तथ्य जोड़कर या सर्जना करके एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचता है या पहुंचने की कोशिश करता है। जब तक व्यक्ति इन नए तथ्यों का अपनी ओर से सर्जन नहीं करता समस्या का समाधान नहीं हो पाता है। उदाहरणस्वरूप कलम का उपयोग लिखने के अलावा अन्य किस रूप में कर सकते हैं। अगर आप कलम का उपयोग लिखने के अतिरिक्त विभिन्न परिस्थितियों में अन्य रूपों में भी करते हैं तो इसे सर्जनात्मक चिंतन कहा जाएगा।

३) आलोचनात्मक चिंतन(evaluative thinking) -आलोचनात्मक चिंतन में व्यक्ति किसी वस्तु, घटना या तथ्य की सच्चाई को स्वीकार करने के पहले उसके गुण दोष की परख कर लेता है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो वस्तु, घटना या तथ्य के गुण दोष को परखने के बाद ही उसे सही या गलत मानते हैं एवं अपने विचारों का प्रतिपादन करते हैं। चिंतन के इस प्रकार को आलोचनात्मक चिंतन कहा जाता है।

स्पष्टतः चिंतन एक अव्यक्त मानसिक प्रक्रिया है। जिसमें व्यक्ति के सामने उपस्थित समस्याओं का समाधान किया जाता है। चिंतन के कई प्रकार हैं जिनका वर्णन उपरोक्त बिंदुओं के अंतर्गत किया गया है। चिंतन के प्रकारों में अभिसारी चिंतन तथा सृजनात्मक चिंतन के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों द्वारा काफी गहन अध्ययन किया गया है।

14/07/2020.

- Sanjay Kumar